IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429

Volume 5, Issue 1, October 2025

Impact Factor: 7.67

^ol/ko dVEcde e; ;kx^ dh Hkfedk % ,d v/;;u

vfuy tk'kh] 'kk/kkFkh]

Mk- fotUn idk'k di#oku] lgk;d vkpk;]

श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़, राजस्थान

'kk/k lkj %

योग एवं वसुधैव कुटुम्बकम् प्राचीन भारतीय सनातन धर्म के अनुयायियों की मूल संस्कार तथा विचारधारा है। जो ‘मोक्षदायी’ योग्यता धारण करने वाला है। संपूर्ण पृथ्वी के मानवों को अपना एक परिवार मानना तथा सुख–दुःख में सम्मिलित होना ही वसुधैव कुटुम्बकम् का मूल स्वरूप है। जिसमें आतंकवाद, अलगाववाद, नक्सली, बेरोजगारी, अभावग्रस्तता तथा गरीबी सहित कोई भी मानव निर्मित भौतिक समस्या विश्व में नहीं हो। भारतीय संविधान में वसुधैव कुटुम्बकम् शब्द का उल्लेख संविधान की उद्देशिका में नहीं किया गया है, फिर भी भारतीय संविधान की उद्देशिका मूल रूपों में वसुधैव कुटुम्बकम् को ही स्थापित करने वाली है। यानि रामराज्य को स्थापित करने वाली है।

Ikeq[k "kCn %

योग, वसुधैव कुटुम्बकम्, मानवीय संस्कृति, भारतीय संस्कृति।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

DOI: 10.48175/568